16/04/19

पाठ-2

असली याचक

शब्द	अर्थ
नम्रता	कोमलता
सहसा	अचानक
सहृदय	अच्छे हृदयवाला / दयालु
राह	रास्ता
प्रयत्न	कोशिश
संलग्न	लगे रहना
ताँता बँधा रहना	भीड़ होना
धरोहर	अमानत, विरासत
राहगीर	रास्ते पर चलनेवाले लोग
आशीष	आशीर्वाद
फिटन	चार पहियों की खुली घोड़ागाड़ी
याचना	प्रार्थना
विकल	दुखी, बेचैन, व्याकुल
शाप	बद्दुआ
संपूर्ण	समग्र, पूरा का पूरा

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

प्रश्न-1 अंधी जो कुछ माँगकर लाती थी, उसे कहाँ रखती थी ?

उत्तर= अंधी जो कुछ पैसे माँगकर लाती थी, उसे अपनी झोंपड़ी में स्थित एक हाँडी में गाड़ कर रखती थी।

प्रश्न-2 सेठ बनारसीदास की कोठी पर हर समय भीड़ क्यों लगी रहती थी ?

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

उत्तर= सेठ बनारसीदास की कोठी पर हर समय भीड़ इसलिए लगी रहती थी क्योंकि वह धर्मात्मा बनने का दिखावा कर लोगों को कर्ज बाँटता तथा दीन-हीन लोगों की जमा-पूँजी धरोहर के रूप में अपने पास रखता था।

प्रश्न-3 अंधी ने बेटे के इलाज के कौन-कौन से तरीके अपनाए?

उत्तर= अंधी ने बेटे के इलाज के लिए दवा-दारू, झाड़-फूँक, टोने-टोटके आदि तरीके अपनाए।

प्रश्न-4 अंधी ने रुपयों की थैली सेठ जी को वापस क्यों लौटा दी?

उत्तर= अंधी ने रुपयों की थैली सेठ जी को वापस इसलिए लौटा दी क्योंकि वह यह रुपए अपने बेटे के लिए एकत्र कर रही थी, जो कि सेठ जी का बेटा निकला और अब भविष्य में उन्हीं के साथ रहने वाला था।

प्रश्न-5 मदद और दान में क्या अंतर है?

उत्तर= मदद और दान में प्रमुख अंतर यह है कि हम कभी-कभार किसी के कहने पर उसकी मदद करते हैं और न कहने पर भी अपनी इच्छा से किसी की मदद कर देते हैं, परन्तु किसी के द्वारा याचना करने पर हम स्वेच्छा से कोई वस्तु उसे दान कर देते हैं।

प्रश्न-6 आपकी दृष्टि में असली याचक (भिखारी) कौन है? क्यों?

उत्तर= हमारी दृष्टि में असली याचक (भिखारी) वे लोग हैं, जो बेईमान, चालाक तथा धूर्त हैं, क्योंकि ऐसे लोग हमेशा दूसरों का अधिकार स्वयं धन-संपत्ति छीनकर ही सुख पाते हैं और ऐसे लोगों की गिनती हमेशा याचक अर्थात् भिखारी के रूप में ही की जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

प्रश्न-1 परन्तु पत्थर में जोंक न लगी - यहाँ पत्थर किसे कहा गया है? क्यों?

उत्तर= परन्तु पत्थर में जोंक न लगी - यहाँ पत्थर सेठ बनारसीदास को कहा गया है क्योंकि एक तो सेठ ने अंधी के सारे पैसे बेईमानी से हड़प लिए और अपने मरणासन्न बेटे के इलाज के लिए अंधी ने रो-रोकर सेठ से प्रार्थना की, परन्तु उस पत्थर दिल सेठ का दिल नहीं पसीजा।

प्रश्न-2 सेठ जी को अंधी को लेने क्यों जाना पड़ा?

उत्तर= सेठ जी को अंधी को लेने इसलिए जाना पड़ा क्योंकि उसका बेटा पुनः ज्वर में बुरी तरह तप रहा था और लगातार माँ-माँ की रट लगाए हुए था। डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था और अपने सड़ते हुए बेटे की जान बचाने के लिए उसे अपने हाथ-पैर जोड़कर उस अंधी को अपने साथ लाना पड़ा।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्रश्न-3 सेवा तो सेठ जी के नौकर भी कर रहे थे, पर अंधी के आने पर ही बच्चा स्वस्थ हुआ। क्यों?

उत्तर= इस दुनिया में हर बच्चे के लिए उसकी माँ ही उसका संसार होती है जो उसे अच्छे से समझती है, पालती-पोसती है और उसके हर दुख-दर्द को समझती है। कभी अगर बच्चे को कोई समस्या हो तो उसे उसकी माँ से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता। ठीक इसी प्रकार भले ही सेठ जी के बच्चे की सेवा में तमाम नौकर लगे हों, परन्तु वह बच्चा हमेशा से ही अपनी माँ को अपने नज़दीक पाता और खुश रहता और जब सेठ जी उस अंधी को अपने बच्चे के पास ले कर आए तो वह बच्चा अपनी माँ का दुलार स्वरूप प्रेम पाकर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा।

प्रश्न-4 सेठ जी बड़े ही धर्मात्मा थे फिर भी उन्होंने अंधी को थरोहर लौटाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर= सेठ जी धर्मात्मा नहीं बल्कि धर्मात्मा बनने का दिखावा कर रहे थे। असल में वे एक चालाक और धूर्त व्यक्ति थे जो लोगों का पैसा स्वयं हड़प लिया करते थे। इसी कारणवश अंधी के पैसों को हड़पने की खातिर सेठ ने उसकी थरोहर लौटाने से मना कर दिया।

प्रश्न-5 सेठ और अंधी के चरित्र की तीन-तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर= सेठ -

i-) सेठ देशभक्त धर्मात्मा होने का दिखावा करता था
ii-) वह गरीबों का हक छीनकर उनका शोषण करता था।
iii-) वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किसी का भी बुरा कर सकता था।

अंधी -

i-) वह एक गरीब महिला थी, परन्तु नेक दिल थी
ii-) वह ममतामयी थी इसलिए अपना बच्चा न होने के बावजूद भी मोहन को प्राणों से अधिक प्रेम करती थी।
iii-) वह दयालु थी इसलिए सेठ जी से अत्यन्त क्रोधित होने के बाद भी वह उनकी प्रार्थना से पिघलकर उनके साथ चल दी।

प्रश्न-6 इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।

उत्तर= भले ही सेठ के पास मान-सम्मान और धन बहुत अधिक था परन्तु वह उस अंधी के समक्ष बहुत तुच्छ था, क्योंकि वह एक धूर्त तथा लालची व्यक्ति था, जिसने अंधी की सारी जमा-पूँजी हड़प ली थी परन्तु नियति को कुछ और ही मंज़ूर था, अंधी का बच्चा ही सेठ का खोया हुआ मोहन था, जिसके प्राण बचाने के लिए सेठ को उसके सामने गिड़गिड़ाना पड़ा और अंततः जाते-जाते वह सेठ को याचक और स्वयं को दाता बना गई

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

क्योंकि जो पैसे उसने मोहन के इलाज के लिए संभाल कर रखे थे वह पैसे उसने सेठ से लिए ही नहीं ।

Good

24/07/19

A+

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera